Review Research Article Website : www.ijbasr.org ISSN : 2349-1965
International Journal of Basic & Applied Science Research
Peer Reviewed and Refereed Journal Impact factor 0.9 2024; 11(Special Issue); 28 - 29

'राम' और 'रावण' द्वंद्व

शिखा
हिन्दी विभाग, महात्मा गांधी महाविद्यालय, दरभंगा

साहित्य की शक्ति को लोग आज प्रायः भूल से गए हैं। इसके पीछे छिपी चेतना और चिंता का लोप तथा अकर्मण्यता का बोल बाला साफ दीखता है। संस्कृति के इतिहास पर जब हम नजर डालते हैं तो पता चलता है कि पूरी दुनिया में साहित्य की शक्ति ने किस तरह से मनुष्योचित समाज बनाने के लिए नेताओं और आम लोगों को प्रेरित किया है। आम लोग भी साहित्य से शक्ति और चेतना पाकर समाज निर्माताओं की भूमिका में उतर आए। भारतीय मनीषा से ही अगर हम सत्य की जाँच करे तो दण्डी ने अपने 'काव्यादर्श' में कहा है दृ इदमंधतमः कृत्स्नं भुवनत्रयम् । यदि शब्दामय ज्योतिरा संसार न दीप्यते e–(1)

अर्थात यह संसार घोर अंधकार में निमग्न हो जाता यदि सृष्टि के आरम्भ से ही शब्द की ज्योति न जलती होती । साहित्या के क्षेत्र में कई सारे विषयों पर चिंतन किया गया है। इसी चिंतन के क्रम में हमें जरूरत है राम और रावण के द्वंद्व को समझने की।

वाल्मीकि ने नारद से कहा था, " अब तक देवता के छंद ने देवता को मनुष्य बनाया, मैं मनुष्य को देवता बनाना चाहता हूँ। हे देवर्शि। मुझे एक ऐसा चरित्र बताओं जिसे छेद में गूंथकर मनुष्य को देवता बना सकूँ। – (2)

नारद ने वाल्मीकि को अयोध्या के राजा राम का नाम बताया। इस पर वाल्मीकि ने कातार भाव से कहा, " हे देवर्शि! नाम तो मैंने भी सुना है, परंतु उनका यथावत् चरित्र तो मैं नहीं जानता, इतिवृत्त कैसे लिखूँगा । मुझे भय हो रहा है कि कही मैं साथ भ्रश्ट न हो जाऊँ ।" दृ(3)

नारद ने हंसकर कहा दृ " कवि दुनिया में जो घटना है, वह सब सत्य नहीं होता । तुम जो कहोगे, वही सत्य होगा, अपनी' मनोभूमि' को 'जन्मभूमि अयोध्या' की अपेक्षा कहीं सत्य मानो ।" दृ(4)

मनुष्य को देवता बनाने की जो कवि–कल्पना है या उसके मन का जो इच्छित यथार्थ है, वही काव्य–सत्य है। इसलिए देसज सच और काव्य–सत्य में फर्क हुआ करता है। हम हमेशा सत्य को टुकड़ों में देखने के आदी हो गये हैं, जबकि सत्य का दर्शन टुकड़ों में नहीं संपूर्णता में होता है। लोग हमेशा कहते हैं–" रावण को हर वर्ष जलाओ। वह पुनः पुनः जी उठेगा । रावण कभी नहीं मरता ।" दृ(5)

दूसरा कहेगा, " राम ही बराबर हारता आया है। निराला ने भी कहा है, रह गया राम–रावण का अविजित समर ।"–(6) तो क्या सचमुच रावण मैं इतना शक्तिशाली है कि वह कभी नहीं मरता। उसके पास' दस सिर और बीस भुजाएँ हैं। रावण राजनीति का पंडित है। वह क्रूर, अत्याचारी और आतताई भी है। फिर भी नहीं मरता ? आखिर कौन दृ सी काली ताकत है जो रावण को जिंदा रखे हुये है।

रावण तो बुराई का प्रतीक है और राम अच्छाई का प्रतिमान । बावजूद इसके अच्छाई का प्रतिमान धुंधला रह गया और बुराई का प्रतीक दिलों में आकर बैठ गया है। समाज के मनोविज्ञान को पढ़े तो पता चलेगा कि

Crossponding author: शिखा
Email : swatilal1983@gmail.com
Date of Acceptance : 22.08.2024
Date of Publication : 30.11.2024

Review Research Article Website : www.ijbasr.org ISSN : 2349-1965
International Journal of Basic & Applied Science Research
Peer Reviewed and Refereed Journal Impact factor 0.9 2024; 11(Special Issue); 28 - 29

आज हर व्यक्ति के भीतर रावण जिंदा है। बाहरी रावण से तो आप निपट लेंगे, लेकिन आपके भीतर यह जो रावण आकर बैठ गया है और तमाम नैतिक व सांस्कृतिक मूल्यों को बहा देने की कसमें खा रहा है? उसका मुकाबला कौन करेगा ? हमारे ऋशि– मनीषियों ने हमेशा आग्रह किया है कि स्वार्थ के पुर्जी से मुक्त होकर ही मनुष्यता के उच्चासन तक पहुँचा जा सकता है। अन्यथा समाजशास्त्र के अनुसार जन्मना पशु और मनुष्य में भेद ही क्या?

अच्छाई की मांग एक नैतिक समाज से ही की जा सकती है। अनैतिकता और अषिश्टता में डूबे समाज से नहीं। जहाँ नैतिकता को दीमक चाट गया हो, जहाँ करुणा और मैत्री को पिछड़े समाज का मूल्य मान लिया गया हो, जहाँ शील और संकोच की मर्यादा भंग कर दी गयी हो, वहाँ अच्छाई की मांग की गुंजाइशा कम ही होती है। एक ऐसा समाज, जिसमें पहले दर्जे का स्वार्थीपन ही नैतिकता हो, वहाँ व्यक्ति अपने स्वार्थी हितों को दुनिया की सब चीजों से ऊपर बैगता है। वहाँ आपा–धापी, लूट–पाट, गलाकाटू दृ स्पर्धा आदि का ही दुर्षन होता है। यही हमारे समाज का उतर आधुनिक मूल्य है। इसमें समाज का मानवीय चेहरा आपको देखने को नहीं मिलेगा। प्रेम की भाषा पढने को नहीं मिलेगी, संवेदना के तार झंकृत नहीं होगे और मुक्ति– प्रसंग की चर्चानदारत होगी।

यह जो देसज सच है, काव्य – सत्य से बिल्कुल भिन्न है। इस देश सच' के भीतर रावण का एक विदूप चेहरा हमेश खलखल करता हुआ नजर आयेगा। जनता इसी को जानती और पहचानती है। यहाँ राम आपको हमेशा अकेला और अलग नजर आयेगा । यहाँ तक कि राम के द्वारा देवी (शक्ति) की अराधना करते वक्त उनका कमल का अंतिम फूल भी कोई चुरा ले जाएगा । इसलिए 'मनोभूमि' और 'जन्मभूमि' का जो द्वन्द्व है, हम बुरे दिनों में रह रहे हैं, इसीलिए अच्छे दिनों की कामना करते हैं। हम रावणों से घिरे है, इसीलिए राम की कल्पना करते हैं। हम अंधेरे में घुट रहे हैं, इसलिए उजाले की बात करते हैं। प्रकाश का उत्सव मानते हैं व्यक्ति कितना भी बुरा होगा, लेकिन अच्छाई की कामना करेगा। व्यक्ति कितना भी कुरूप होगा, लेकिन सौंदर्य की उपासना करेगा। यह जो व्यक्ति का मनोमय संसार' है, उसमें चेतन और अचेतन, अच्छाई और बुराई का द्वंद्व हमेशा चलता रहता है। राम और रावण का प्रतीक इसी बात का सबूत है। जब तक भीतर राम नहीं जन्मेगा, रावण कभी पराजित नहीं होगा क्योंकि दोनों ही भाव हमारे भीतर मौजूद है। भाव, विभाव, अनुभाव दृ सभी के सभी अगर राममय (मानवोचित) नहीं होते, तो रावण जिंदा ही रहेगा। इसलिए इस बात की गांठ बांध लेनी चाहिए कि राम और रावण का द्वंद्व तब तक चलता रहेगा, जब तक कि हम एक मानवोचित समाज की रचना नहीं कर लेते।

संदर्भ सूची:

1. भारतीय एवं पाष्चात्य काव्य शास्त्र के सिद्धान्त–डॉ० राज किशाोर, पृ० 52
2. साहित्य और संस्कृति की भूमिका दृ राणा प्रताप पृ० 7
3. वहीं, पृ० – 121
4. वही, पृ० – 124
5. सीता पुनि बोली दृ मृदुला सिन्हा, पृ० 23
6. रघुकुल रीति सदा दृ राजेन्द्र अरुणदृ पृ० – 102

***